श्रीमती रुखसाना सुल्ताना : 8460, श्री एच० एस० जोश : 1218, श्री जगदीश टिटलर : 320, श्री अर्जुन दास : 1214 ।

(ख) में क्रमांक (4) पर वर्णित श्रीमती ए० के० बिन्द्रा के सम्बन्ध में आंकड़े उपलब्ध नहीं है ।

माननीय सदस्य ने प्रश्न किया है कि इसमें कितने रुपये लोगों से जबर्दस्ती वसूल किये गये, कितने धन का खर्च हुआ, उन्होंने कितना अपने पर खर्च किया । यह सूचना सरकार के पास नहीं है । इसके आंकड़े एकत्रित किये जा रहे हैं । उपलब्ध होने पर उन्हें सदन के सामने रख दिया जायेगा ।

श्री कंवर लाल गुप्त : क्या मंत्री महोदय यह मालूम करेंगे कि इन लोगों ने वालन्टेरी स्टेर्लाइजेशन कराया, या जबर्दस्ती उनका स्टेर्लाइजेशन किया गया । अगर उनकी जबर्दस्ती नसबन्दी की गई, तो क्या सरकार इन लोगों का प्रासीक्यूशन करेगी ?

श्री राज नारायण : इस सम्बन्ध में जो तात्कालिक सूचना प्राप्त हुई है, मैं उसे भी सदन के सामने रख देना चाहता हूं । इन व्यक्तियों को फीस के रूप में निम्नलिखित रकम दी गई है :

श्रीमती रुखसाना सुल्ताना : 84,210 रुपए, श्रीमती के० राधारमण : 16,060 रुपये, श्री जगदीश टिटलर : 3,170 रुपए, श्री अर्जुन दास : 7,080 रुपए, उपाध्यक्ष, डी० डी० ए० : 4,370 रुपये, श्री हरचरण सिंह जोश : 12,030 रुपए, श्री ललित माकन : 28,890 रुपए ।

श्री शिवनारायण सरसूनिया : अध्यक्ष महोदय, मैं आपका ध्यान इस तरफ दिलाना चाहता हूं कि दिल्ली में गन्दी खाने की चीजें बेची जा रही हैं और इस तरह जनता के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है । उसका नमूना यह लिमिका की बोतल है ।

SHRI K. LAKKAPPA: Sir, he is showing a soda bottle. It is dangerous to show such things inside the House.

MR. SPEAKER: That is not a soda bottle. That is a Limca bottle. Perhaps he wanted to show the contents of the Limca bottle thinking that the debate on Food and Agriculture Ministry has started. Now, we have taken up Short Notice Question which is being answered by the Minister. Please sit down.

अध्यक्ष महोदय : शार्ट नोटिस क्वेश्चन—श्री ओ० पी० त्यागी ।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मन्त्री (श्री राज नारायण) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय सदस्यों से नम्र निवेदन करना चाहता हूं कि वे जरा सदन में डिसेन्सी और डेकोरम बनाये रखें । मेरी यह आदत नहीं है कि मैं हल्ले में बोलूं । मैं तो चाहता हूं कि यहां शान्त वातावरण हो, अपनी बात कहिये और दूसरों की बात सुनिये—अगर कटु हो, तो भी सुनिये ।

SHORT NOTICE QUESTION

एन्टरो वायोफार्म तथा मेक्साफार्म के प्रयोग पर प्रतिबन्ध

+

S.N.Q. 8. श्री ओम प्रकाश त्यागी :
डा० वसन्त कुमार पंडित :
डा० बापू कालदत्ते :
डा० मुरली मनोहर जोशी :
श्री समर गुह :

क्या स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का ध्यान अमरीका के एक प्रसिद्ध मेडिकल जनरल में प्रकाशित

इस आशय के समाचार की ओर दिलाया गया है कि अतिसार रोगों में दी जाने वाली अंग्रेजी दवा एन्टरो-वायोफार्म अथवा मेक्साफार्म से मस्तिष्क, आंखों तथा स्नायु प्रणाली को गम्भीर क्षति पहुंचती है और इसके परिणामस्वरूप जापान, नार्वे, स्वीडन आदि जैसे देशों में इसके प्रयोग पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है ; और

(ख) यदि हां, तो इस पर सरकार की क्या प्रतिक्रिया है ?

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री (श्री राज नारायण) :(क) जी हां । उक्त रिपोर्ट इंग्लैण्ड से प्रकाशित 'लासेट' नामक पत्रिका में छपी थी ।

(ख) सरकार को इस औषधि के कथित अहित प्रभावों की पहले ही जानकारी है । इस मामले की इस क्षेत्र में चिकित्सा विशेषज्ञों से परामर्श करते हुये जांच की जा रही है ।

श्री ओम प्रकाश त्यागी : जब जापान, नार्वे, स्वीडन आदि ने इस दवा के प्रयोग का यह दुष्प्रभाव बताया कि मस्तिष्क, आंख और नर्वस सिस्टम पर इसका घातक प्रभाव पड़ता है तो मैं यह जानना चाहता हूं कि जापान, नार्वे और स्वीडन ने जांच करके कब इस पर प्रतिबंध लगाया और आपने कब अपने विशेषज्ञों को इस दवा के बारे में सही जानकारी प्राप्त करने के लिए निर्देश दिया ? उनकी क्या रिपोर्ट इस दवा के बारे में आई और आपने इस दवा के सम्बंध में अब तक क्या प्रिकाशंस लिए हैं ?

श्री राज नारायण : यह प्रश्न 20 जून, 1977 के टाइम्स आफ इंडिया में प्रकाशित एक प्रेस रिपोर्ट पर आधारित है । इस रिपोर्ट की एक प्रतिलिपि अनुबन्ध 1 में संलग्न है । प्रेस रिपोर्ट में इस बात का जिक्र किया गया है कि एक प्रमुख मेडिकल पत्रिका में "आइडो- "क्लोरोहिड्रा[illegible]," नामक एक प्रसिद्ध अतिसार-रोधी दवाई जो "क्विनोफार्मोल" के नाम से भी प्रसिद्ध है, के इस्तेमाल पर यह देखते हुए प्रतिबन्ध लगाने के बारे में बल दिया गया है कि इस दवाई के इस्तेमाल से कभी कभी आंखों की नजर जाती रहती है और मस्तिष्क एवं केन्द्रीय तंत्रिका-तंत्र को स्थायी रूप से क्षति पहुंचती है । इस दवाई को इसी नाम से तथा अन्य दवाइयों के साथ मिला कर "एन्ट्रोवायोफार्म" और "मैक्साफार्म" नाम से क्रमश: मैसर्स सिब्बा, गेगी द्वारा बेचा जाता है । इन दवाइयों के इस्तेमाल से होने वाले उपर्युक्त दुष्प्रभावों का पता जापान में लगाया गया है जहां इन दवाइयों के इस्तेमाल पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है । जापान में पूरा प्रतिबन्ध है । ..... (व्यवधान) .....

हमारे यहां नहीं लगाया गया है । उत्तर जरा सुन लें । हमारे यहां के विशेषज्ञों की सम्मति है कि जो दवा सर्द मुल्कों में नुकसानदेह होती है वह गर्म मुल्कों में भी नुकसानदेह हो, यह जरूरी नहीं है । वे अभी भी जांच कर रहे हैं । हमारे यहां जब यह प्रश्न आया और मैंने काफी सतर्कता के साथ कहा कि मैं इस शार्ट नोटिस का उत्तर दूंगा तो मैंने इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज के बड़े-बड़े डाक्टरों से, वहां के डाइरेक्टर से, अपने विभाग के जो तमाम जानकार लोग हैं उन से और सभी लोगों से जानकारी प्राप्त की और मुझे यह मालूम हुआ कि हमारे यहां कभी इस प्रकार की कोई शिकायत नहीं हुई कि इससे आंख अन्धी हो गई या मस्तिष्क खराब हो गया । इस तरह की कोई शिकायत नहीं मिली है ।

अगर इससे संतोष हो तो मैं समझता हूं इतना काफी है और मैं बैठ जाऊं ।

श्री ओम प्रकाश त्यागी : मेरा प्रश्न बिलकुल अलग था । आपने उत्तर कुछ और दिया । आपने पहले उत्तर दिया था कि हमने विशेषज्ञों को जांच के लिए दिया हुआ है ।

उनकी रिपोर्ट आएगी । अभी आप बोल रहे हैं कि हमने मेडकल इंस्टीट्यूट से और बाकी सब से जानकारी प्राप्त की है, उन्होंने यह रिपोर्ट दी है । मैंने यह जानकारी प्राप्त करनी चाही थी कि जापान, नार्वे, स्वीडन आदि ने अपने यहां इस दवा के प्रयोग पर कब प्रतिबन्ध लगाया । इसके बाद कब अपनी सरकार ने अपने विशेषज्ञों को जानकारी प्राप्त करने के लिए दिया ? अब तक वह रिपोर्ट आई या नहीं ? नहीं आई तो क्यों नहीं आई ?

श्री राज नारायण : जितनी जानकारी मुझे है उसे सुन लें । इसीलिए मैं चाहता हूं कि जो मूल प्रश्नकर्ता हैं उन के भावों को जरा सदन के दूसरे सम्मानित सदस्य भी समझें । मगर उनके भावों को न समझ कर बीच-बीच में दूसरे प्रश्न कर देते हैं । इसलिये मैं निवेदन कर दूं कि मूल प्रश्न का उत्तर अभी पूरा नहीं हुआ था कि बीच में दूसरा प्रश्न आ गया ।

1967 में एक पत्रिका में इस आशय की रिपोर्ट प्रकाशित हुई थी, उसी समय से हमारे यहां के विशेषज्ञों ने जांच-पड़ताल शुरू कर दी और कई तरीकों से यह जानने की कोशिश की कि इस दवा का हमारे यहां क्या-कुप्रभाव पड़ता है । लेकिन कुप्रभाव का सही रूप क्या है--इसका कोई प्रमाण अभी इनके पास नहीं आया है ।

इसका यह मतलब नहीं है कि हमारे यहां के विशेषज्ञों ने इसकी जांच करना बन्द कर दिया है, अभी भी वह जांच जारी है । वे चाहते हैं कि हम भी किसी नतीजे पर पहुंचें । जब जापान ने इसको बन्द कर दिया है, स्वीडन ने बन्द किया है, नार्वे ने बन्द किया है और अमरीका में भी जो इस दवा को बनाने वाली कम्पनियां थीं, वहां सरकारी प्रतिबन्ध न होने के बावजूद भी, उन्होंने यह दवा बनाना बन्द कर दिया, इसका अर्थ है कि एक प्रकार से अमरीका में भी इस दवा का बनाना बन्द हो गया, जब ऐसे बड़े-बड़े विकसित राष्ट्रों में इस दवा पर एक प्रकार से प्रतिबन्ध लग गया, तो भारतवर्ष में भी इसकी समुचित जांच-पड़ताल होनी चाहिये । यह जांच-पड़ताल एक तरह से 5-7 साल से चल रही है और आगे भी यह जांच-पड़ताल होगी । मैं सम्मानित सदस्यों से इस बात के लिये बधाई देना चाहता हूं--उन्होंने इस प्रश्न को पूछ कर हमारा ध्यान इस ओर खींचा है, ताकि हम और तत्परता के साथ जांच करें कि इसका कुप्रभाव मस्तिष्क पर पड़ता है या नहीं । लेकिन अभी तक कोई भी ऐसा उदाहरण नहीं मिला, जिससे हम कह सकें कि इसका कुप्रभाव आंख और मस्तिष्क पर पड़ा है ।

श्री ओम प्रकाश त्यागी : क्या यह सही है कि यह दवा विदेशों में निर्मित होती है और विदेशी लोग बहुत बड़ी मात्रा में इसको यहां भेज रहे हैं ? जब तक आपके पास पूरी रिपोर्ट न आये, क्या तब तक सावधानी के तौर पर सरकार इसको यहां प्रतिबन्धित करेगी और ऐसा प्रबन्ध करेगी कि तब तक आयुर्वेद की कोई दवा जो इन दवाओं के स्थान पर प्रयोग की जा सकती हो, उपयोग में लाई जाये ?

श्री राज नारायण : हमारे यहां के विशेषज्ञ भी इस सम्बन्ध में एक राय देते हैं कि इसको ज्यादा इस्तेमाल नहीं करना चाहिये, 14 दिन से ज्यादा इस्तेमाल नहीं करना चाहिये और इस्तेमाल भी करें तो थोड़ा इस्तेमाल करें ।

माननीय सदस्य कहते हैं कि इस बीमारी के लिए आयुर्वेदिक सिस्टम को क्यों न चलाया जाये । यह ठीक है कि आयुर्वेद में भी अनेकों प्रकार के चूर्ण हैं, औषधियां हैं, जिनसे पेट की बीमारियों को दूर किया जा सकता है । मैं बहुत ही अनुगृहीत होऊंगा--इस सदन का और विरोध पक्ष का, यदि वे आयुर्वेद पद्धति को बढ़ायें । मगर मेरी परेशानी यह है कि जब मैं यहां दो दिन का सम्मेलन करता हूं--आयुर्वेदिक, यूनानी, होमियोपैथिक, सिद्धा, योग और दूसरी भारतीय पद्धतियों के

सम्बन्ध में, तो विरोध पक्ष की ओर से व्यंग किया जाता है । प्रधान मंत्री जी के भाषण पर गलत ढंग से टिप्पणी की जाती है—और यह कहा जाता है कि हमारे स्वास्थ्य मंत्री आजकल एलोपैथी के विरोध में हैं .....

MR. SPEAKER: He asked whether it can be used or not. Please reply to that.

श्री राज नारायण : मैं यही कहना चाहता हूं कि आयुर्वेद की दवाओं का उदर रोगों में जितना भी इस्तेमाल किया जायेगा, हम उसका स्वागत करेंगे ।

DR. VASANT KUMAR PANDIT: May I know why the Government of India is not dropping the use of this drug or at least lay down that it should be given only on medical prescription? In all the developed and advanced countries, research has been done. The minister has agreed that this should not be used in large quantities. Will the government then think it right, in the interests of health of the people, that this drug should be sold only on doctor's prescription?

श्री राज नारायण : श्रीमन् माननीय सदस्य जो प्रश्न पूछ रहे है, उसके बारे में मैंने पहले ही बता दिया है कि एन्ट्रोवायोफोर्म और मेक्साफोर्म इन दोनों दवाओं को बहुत से लोग इस्तेमाल करते हैं । इस सदन के बहुत से माननीय सदस्य भी इस्तेमाल करते हैं । बहुत से पढ़े लिखे और विद्वान् लोग यह जानते हैं कि सिग्रेट पीना नुक्सानदेह है, इससे कैंसर हो जाता है फिर भी लोग सिग्रेट पीते हैं । यहां तक कि हमारे केबिनेट के लोग भी सिग्रेट पीना बन्द नहीं करते । हमारे दो-तीन केबिनेट के सदस्य हैं, जो सिग्रेट पीना बन्द करने के लिए तैयार नहीं हैं । आज जब मैं अपने सचिवालय में बात कर रहा था तो एक सज्जन मेरे पास आये, उन्होंने बताया कि मेरे पेट में गड़बड़ थी, मैंने एन्ट्रोवायोफोर्म ले ली, ठीक हो गयी ।

DR. VASANT KUMAR PANDIT: Government should stipulate that these drugs should be given only on medical prescription.

श्री राज नारायण : ये डाक्टर हैं, ये भी इस बात को वजन देते हैं (**व्यवधान**) मैं इनके प्रश्न का उत्तर दे रहा हूं । ये जरा इस बात को समझ लें । (**व्यवधान**) जो फिलास्फी का डाक्टर होगा वह मेडिकल का भी डाक्टर होगा । (**व्यवधान**) मेरा कहना यह है कि इनके प्रश्न पर हम विचार करेंगे । जहां तक दवाओं का सम्बन्ध है इस पर हम विचार करेंगे कि ये दवाएं डाक्टरों के प्रेसक्रिप्शन पर ही मिलें ।

डा० मुरली मनोहर जोशी : यह बहुत गम्भीर प्रश्न है । मैं माननीय मन्त्री जी का ध्यान इस बात की ओर आकृष्ट करना चाहूंगा कि सीबा एक बहु-राष्ट्रीय औषधि निर्माता कम्पनी है । इस कम्पनी ने इन औषधियों का निर्माण किया है । इन्हीं दवाओं के बारे में जो कहा गया है, मैं पूछना चाहता हूं कि क्या यह मन्त्री जी की जानकारी में है या नहीं । इन दवाओं के बारे में कहा गया है—

> Drugs not authorized for sale in the country of origin or withdrawn from the market for reasons of safety or lack of efficiency are sometimes exported and marketed in developing countries, in order to keep the multi national factories running. Developing nations are being used as testing grounds for such dangerous drugs. Consequently, we are being exploited by them.

Multi-nationals also use doctors and manipulate research in developing countries. This firm, Ciba Geigy organized a symposium somewhere in America; and there, the doctor has said—it is on record:

> "Ciba Geigy supplied all comforts of bed and board in the name of organizing a symposium."

This is the state of affairs.

यह कम्पनी बहु-राष्ट्रीय है? क्या यह आपको मालूम है ? यह जो एन्ट्रोवायोफार्म और मेक्साफार्म निर्मित करती है उससे इसने पांच करोड़ रुपया फारन एक्सचेंज के रूप में कमाया है । इस सीबा कम्पनी का केपिटल 74–75 में 1811 लाख रुपये था, जो 75–76 में 1977 लाख रुपये हो गया । इसी प्रकार इसका पेडअप केपिटल 487 लाख रुपये था जो बाद में 617 लाख रुपये हो गया । क्या इस बात पर ध्यान दिया गया है ? यही कम्पनी इन दवाओं को बना कर इस देश में बच रही है । हमारे देश की जो रिपोर्ट है उसको भी सुन लीजिये । डा० एस० आर० दास गुप्त ने इण्डियन साइन्स कांग्रेस में भुवनेश्वर में 1977 में वार्न किया था और कहा था :

Dr. S. R. Dasgupta had warned against the harmful consequences of the administration of a variety of drugs.

क्या सरकार ने मल्टीनेशनल कम्पनियों के द्वारा सप्लाई की गई ड्रग्ज़ के इस एसपैक्ट पर भी विचार किया है या नहीं ? पूरी लिस्ट पर विचार होना चाहिये । मैं जानना चाहता हूं कि कितनी फारेन ड्रग्ज़ आज देश में मार्किट में हैं और उनमें से कितनी जरूरी हैं और कितनी गैर जरूरी ?

श्री राज नारायण : बड़ा व्यापक प्रश्न उठाने के लिए मैं माननीय सदस्य का अनुगृहीत हूं । सचमुच में इस पर संसद् के सभी सदस्यों को गम्भीरता से विचार करना चाहिये । केवल दवाइयों के द्वारा ही विदेशी कम्पनियां विकासशील देशों का शोषण नहीं कर रही हैं और तरीकों से भी विकसित राष्ट्र विकासशील देशों का शोषण कर रहे हैं । उनमें एक तरीका यह भी है । दवाइयों का भी है । इसके बारे में हमारा मन्त्रालय बहुत ही सजग है । इस वास्ते हम अपनी ओर से कोई ऐसी व्यवस्था करें जिससे हम आयुर्वेद की सस्ती से सस्ती दवाएं बना सक, यूनानी की सस्ती से सस्ती दवाएं बना सकें, होम्योपैथी की सस्ती से सस्ती दवाएं बना सकें, रोगों के निवारण के लिए नैचरोपैथी को इस्तेमाल में ला सकें, योग और सिद्धा का इस्तेमाल बढ़ा सकें । अगर सरकार सजग न होती तो ये सीबा गेगी और मल्टीनेशनल डकैत लोग इसको खा जाते । हम इनको खूब जानते हैं, इनके प्रभाव को खूब जानते हैं । यह भी न समझा जाए कि केवल बाहरी लोग ही हैं । परसों मैं बम्बई गया था । वहां दवा बनाने वाले बड़े बड़े लोग हैं । उन्होंने मुझे बुलाया था । उनको मैंने यही कहा कि दवा की लागत और इसकी बिक्री की कीमत में कोई रेशो होना चाहिये । कितने में दवा बनती है और कितने में बिकती है इसमें रेशो होनी चाहिये । चार पैसे में तपेदिक की सुई बनती है और सरकार दाम तय करती है एक रुपया । आठ आठ गुना ज्यादा दाम तय किए जाते हैं । पूना में सरकारी कम्पनी है स्ट्रैप्टोमाइसीन की सुइयां बनाने की । चार पैसे में दवाई बन ती है और एक रुपया कीमत सरकार रखती है । जो सरकार अब तक थी वह भी क्या डकैत नहीं थी ? देशी डकैतों और विदेशी डकैतों और साथ ही साथ बहु-विदेशी डकैतों, सभी से जनता की रक्षा करने के उपाय हमारा मन्त्रालय सोच रहा है । मैं माननीय सदस्य का अनुगृहीत हूं कि उन्होंने हमारा ध्यान इधर आकर्षित किया है ।

SHRI SAMAR GUHA: Members who are free from ministerial obligations either here or on the other side can use the word "dacoit", but when Government is permitting certain companies to function in our country, it is not proper for them to call them dacoits.

श्री राज नारायण : हमने उनको कोट किया है ।

MR. SPEAKER: The mistake is not that of the Health Ministry, but a person behind you. He created all the trouble by giving that word to the Health Minister.

श्री राज नारायण : आपकी आज्ञा से मैं माननीय सदस्यों को एक बात बता देना चाहता हूं । यदि बहुत ही सावधानी से, विवेकपूर्ण ढंग से विचार किया जाए, तो दवाएं बनाने का काम कौनसा मन्त्रालय करता है, किस मन्त्रालय के अन्दर यह आता है? यह हमसे सम्बन्धित नहीं है । मगर फिर भी चूंकि मेरी जानकारी है इसलिये बता दिया क्योंकि टैक्नीकल आवरण के अन्दर अपने को छिपाना नहीं चाहता था, इसलिये मैंने जवाब दे दिया । वैसे यह मिनिस्ट्री आफ़ केमिकल्स के अन्दर आता है, मगर हमने उचित समझा कि कम्बाइन्ड रेस्पांसिबिलिटी के आधार पर जवाब दे दिया जाये । क्योंकि हम राष्ट्र का शोषण होने देने के लिये तैयार नहीं हैं चाहे देसी करे, विदेशी करे, शोषण हम बर्दाश्त नहीं कर सकते ।

श्री समर गुह : अगर मन्त्री महोदय समझते हैं कि डकैत हैं तो कल ही इनको आर्डिनस जारी करके बन्द कर देना चाहिये ।

He is violating all sense of decorum. This is not the way of functioning.

श्री राज नारायण : माननीय समर गह इस सदन के सम्मानित और पुराने सदस्य हैं और व्यक्तिगत तरीके से हमारे निजी मित्र भी हैं इसलिये उनके सवाल का मैं जवाब न दूं यह हमारे लिये शोभनीय नहीं है । मैं उनको यह विश्वास दिलाना चाहता हूं कि ऐसे बहुत से प्रश्न इस सरकार के विचाराधीन हैं कि किन किन विषयों को प्रायरेटी लिस्ट में रख करके कब कब कैसे कैसे अ यादेश जारी किया जाये ताकि देश की जनता का शोषण रुके । उसमें बड़े बड़े लोग भी आ सकते हैं, कारखानेदार भी आ सकते हैं, व्यक्ति भी आ सकते हैं ।

श्री समर गुह : अध्यक्ष जी, मैं मन्त्री जी की खुशी के लिये उनसे हिन्दी में ही सवाल पूछता हूं । जब मैंने सुना कि यहां की एक्सपर्ट कमेटी के मेम्बर ने यह कहा कि ठंडे मुल्क में जो दवा नुकसान देती है, वह दवा गरम मुल्क में नुकसान नहीं दे सकती है शायद, तो यह एक बड़े हल्के ढंग का जवाब है जो एक्सपर्ट की तरफ़ से नहीं होना चाहिये । मैंने 550 दिन में से 300 दिन यह दवायें ली थीं ।

श्री राज नारायण : माननीय सदस्य का दिमाग खराब नहीं हुआ । अभी तक एक भी शिकायत नहीं आई कि किसी का दिमाग खराब हुआ हो ।

श्री समर गुह : आप तो जानते हैं कि जेल डिसेन्ट्री और डायरिया का डिपो होता है । मैंने करीब 300 दिन मैक्साफ़ार्म और एन्ट्रावायफ़ार्म ली । अब मझे डर लग रहा है क्योंकि रिहाई के पहले दो, तीन महीनों में सप्ताह में दो, तीन दिन बेहोश हो जाता था, यह बात मेडिकल रेकार्ड में मौजूद है। डाक्टरों ने भी तरह तरह का ऐग्जामिनेशन किया, बेहोश हो जाता था, लेकिन कोई कारण वह नहीं बता पाये । तो अब मुझे लग रहा है कि मैक्साफ़ार्म के साथ कोई लिंक है ।

आपने कहा कि आपने ऐक्सपर्ट कमेटी बनायी है । तो मैं जानना चाहता हूं कि उस ऐक्सपर्ट कमेटी के पर्सोनल का क्या नाम है । दूसरे यह कि जिस पर्सोनल ने जापान में 30,000 आदमियों को एग्जामिन किया उसकी रिपोर्ट और जो जापान, स्वीडन, नार्वे और यू०एस०ए० ने यह दवा बन्द कर दी वहां की रिपोर्ट और वेस्ट जर्मनी, डेनमार्क और फिनलैण्ड में जहां प्रैस्क्रिप्शन पर यह दवा बेची जाती है, उसकी साइंटिफिक रिपोर्ट और लेनसिट मेडिकल मैगजीन में जो रिपोर्ट है वह क्या रिपोर्ट हैं, और क्या यह रिपोर्ट आपको मिली या एक्सपोर्ट कमेटी को कहेंगे कि सब मुल्कों से इस रिपोर्ट को मंगा लें ?

जो मेडिसिन है इसके दो जैनरिक नाम हैं--क्लारो हाइड्रोक्सीक्वानीन और औक्सी हाइड्रोक्सीक्वानीन, यह दो जो मेन जैनरिक मेडिसिन्स हैं क्या आपकी एक्सपर्ट कमेटी इन दोनों के बारे में इन्वेस्टीगेट करेगी ?

श्री राज नारायण : माननीय सदस्य ने वास्तव में अगर हमारे पहले उत्तरों को क्रमबद्ध सुना होता तो उनके प्रश्न का उत्तर उसमें था ।

असल में पहली बार अक्तूबर, 1970 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने यह सूचित किया कि इन दवाओं से कुछ खराबी पैदा हो रही है आमाशय में । उसके बाद जो हमारे यहां के निर्देशक थे, उन्होंने सब राज्यों को लिखा कि राज्य में जो इस तरह की दवाएं बनाने वाले हैं, उन सब को सूचित कर दें कि दवाओं पर वह लिखा करें कि इन दवाओं का इस्तेमाल सोच-समझ कर डाक्टर की सलाह के आधार पर ही किया जाये । यह उस पर लिखा हुआ भी है ।

श्री समर मुखर्जी : अध्यक्ष महोदय, मेरा दूसरा प्रश्न है । मंत्री महोदय और जवाब दे रहे हैं ।

MR. SPEAKER: It is Question Hour, not a cross-discussion, not a debate. I have allowed half-an-hour on this one question.

श्री राज नारायण : माननीय सदस्य पुराने पार्लियामैंटेरियन हैं । मैं अभी सवाल का जवाब देकर बैठ नहीं गया हूं । जब तक मैं बैठ न जाऊं, उनको यह नहीं कहना चाहिये कि हमारे इस सवाल का जवाब नहीं दिया । यह उन्होंने हमारे साथ ज्यादती की है ।

जितनी भी रिपोर्ट आई हैं, सब को पढ़ा गया है और उसके अनुसार उपाय निकाले जा रहे हैं । एक उपाय यह है कि दवाओं पर लिखवाने का आदेश दे दिया गया है कि इसका इस्तेमाल सोच समझ कर डाक्टर की सलाह से किया जाये और मनमाने तरीके से न किया जाये । तो यह उन रिपोर्टों के पढ़ने के बाद ही हुआ । जैसे सिगरेट पर लिखा रहता है—"सिगरेट स्मोकिंग इज इंज्यूरियस टू हैल्थ" । मगर हमारे दोस्त श्री बीजू पटनायक बराबर अनुनय, विनय और आग्रह के बावजूद सिगरेट को पीना पसन्द करते हैं ।

THE MINISTER OF STEEL AND MINES (SHRI BIJU PATNAIK): Since it is a personal matter, I have a personal explanation. After smoking for 30 to 40 years, I am more healthy than him.

श्री राज नारायण : सिगरेट पर इंजूरियस टु हैल्थ लिखने के बाद भी भाई बीजू पटनायक इसके इस्तेमाल से ज्यादा स्वस्थ हुए हैं । तो हमारी इन दवाओं के इस्तमाल से भी कोई कह सकते हैं कि वह ज्यादा स्वस्थ हो गये हैं । मगर इन तमाम बातों को मंत्रालय ध्यान में रखेगा । हम एक्सपर्ट्स को कहेंगे कि रिपोर्टों को मंगवा लें और उनको देख लें । मगर अभी तक जो स्थिति है, उस में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं निकला है जो कह पाया हो कि इस दवा के उपयोग से हमारा मस्तिष्क खराब हो गया ।

Some Hon. Members *rose*—

MR. SPEAKER: We have already spent 35 minutes on this question. If you want to take another one hour, I do not mind. I will close up the whole of other work and go on with this. Therefore, I say, let us go to the next item.

WRITTEN ANSWERS TO QUESTIONS

Community Health Workers

*269. SHRI M. KALAYANASUNDARAM: Will the Minister of HEALTH AND FAMILY WELFARE be pleased to state:

(a) whether some of the States have disagreed with the proposal to create community health workers as the rural medical facilities have reached